European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 10
October 2018

हिदीं साहित्य के आधुनिक काल में नारी की स्थिति

कुलदीप (शोधार्थी)
पी0एच0डी0
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा)
Email: kuldeepkhanna5@gmail.com

शोधालेख सार: वस्तुतः नारी के बिना समाज की कल्पना करना असंभव है। चूंकि स्त्री और पुरूष दोनों ही समाज के मजबूत आधार स्तम्भ है, इसलिए स्त्री जीवन के हर क्षेत्र मे पुरूष के समान आदर पाने की अधिकारिणी है किन्तु पितृसत्तात्मक समाज अपनी पारम्परिक मान्यताओं को आड़ में स्त्री का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शोषण करने के साथ–साथ उसका दैहिक शोषण करने मे भी कोई गुरेज नहीं रखता। पितृसत्ता ने स्त्री को उपयोग की वस्तु बना दिया। पुरूष ने स्त्री–जीवन, उसकी योग्यता, उसकी कार्यशैली को निर्धारित करने की चेष्टा की लेकिन यथार्थ सत्य यह है कि स्त्री भी पुरूष की भांति समाज का अभिन्न अंग है। उसकी भी पुरूषों के समान बराबर सामाजिक स्थिति है, वह अपने जीवन में सही चुनाव की क्षमता रखती है मगर विडम्बना यह है कि स्त्री को न चुनाव का क्षेत्र दिया गया न अधिकार। स्त्री को तो पशु के समान केवल आदेश मानने वाला माना गया है। नारी को उसकी एक अलग पहचान से वंचित रखा गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में आधुनिक काल में भारतीय समाज में नारी की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्दः महिलाएँ, सामाजिक जीवन, कुप्रथाएं, नारी का शोषण, आधुनिक युग।

भूमिका : हम इस बात का अच्छी तरह जानते है कि वैदिक युग को छोड़कर नारी की स्थिति अधिक अच्छी नहीं थी और प्राचीन काल में नारी को अपने जन्मजात अधिकारों का ज्ञान नहीं था। वह घर की चारदीवारी तक ही सीमित रहती थी। उसका अपना कोई अस्तित्व न होने के कारण राजनीतिक व सामाजिक जीवन से उसका संबंध विच्छेद हो चुका था। धार्मिक रूप से भी उसका कोई वजूद नहीं था। नारी के बारे में यह कहना कदापि गलत न होगा की, उसमें प्राण ही शेष बचे थे। उसका अपने जीवन पर कोई अधिकार नहीं था। हमारा पुरुष प्रधान समाज उसे अबला मानकर उसका अपमान करता

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 10
October 2018

था। नारी के जीवन संघर्षों की गाथा के साथ ही यह भी स्वीकार किया जाता है कि पुरुष के जीवन में आए प्रत्येक उतार चढ़ाव में उसका साथ और सहयोग देकर उसे विकासशील बनाया है।

यह बात महत्वपूर्ण मानी जा सकती है कि महिलाओं के लिए अठारवीं सदी काल बनकर आई क्योंकि नारी शोषण का शिकार बन चुकी थी और उसे अनेक कुप्रथाओं ने घेर लिया था तथा उसका कार्य क्षेत्र घर की रसोई को माना गया एवं उसे कहीं भी बाहर आने जाने की अनुमति नहीं थी। इस तरह नारी मन और शरीर से कमजोर होती जा रही थी। धीरे–धीरे वह कुंठाओं का शिकार होती जा रही थी। उन्नीसवीं शताब्दी जिसे पुनर्जागरण एवं नव चेतना का काल कहा जाता है, वह महिलाओं के लिए नई राहें लेकर आया। इस काल ने महिलाओं की सुप्त आत्माओं और स्वाभिमान को जगाने में सहायता की, इस सदी में वैचारिक क्रांति ने बेटे और बेटी के बीच अंतर की गहरी खाई को भरने की कोशिश की पतंजलि ने महाभाष्य लिखा की पुत्र प्रकाश के समान और पुत्री संकट का स्त्रोत है। पुत्र को हर तरह का सुःख देने वाला बताया, जबकि बेटी को मुसीबतों का घरमाना।

आगे चलकर भारतेंदु युग में साहित्य में नारी के माता, पत्नी, बहन आदि त्याज्य रूपों की दोबारा स्थापना की गई। सदियों से उपेक्षित और भोग विलास की वस्तु समझी जाने वाली नारी के लिए यह सुधारवादी काल बनकर आया। इस युग के अनेक कवियों और लेखकों ने नारी के जीवनको अपनी लेखनी का आधार बनाया।दिवेदी युग में महान नारियों के चरित्रांश 'सरस्वती कामिनी कोतूहल' में छापे गए अब नारीमातृ की प्रतिक्रिया सीमित नहीं रही, बल्कि उसमें नारीत्व की सार्थकता कर्तव्य निष्ठा एवं देश प्रेम में भी आंकी जाने लगी।[1]

अधिकांश साहित्यकारों का मानना है कि भारतेंदु युग की अपेक्षा द्विवेदी युग के कवियों ने महिलाओं के जीवन चरित्र को ऊंचा उठाने के लिए कई लेखपत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाएं। द्विवेदी युग नारी के लिए एक नई चेतना लेकर आया और उसने नारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर मानव धरातल पर लाने का सार्थक प्रयास

1 डॉ० सावित्री डागा – आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्य में नारी – पृष्ठ 60

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 10
October 2018

किया। इस युग में नारी को पुरुष की शक्ति एवं प्रेरणा स्त्रोत स्वीकार किया। इस युग की अधिकतर रचनाएँ नारी जीवन, उसका चरित्र, धैर्य, साहस, शक्ति, नैतिकता आदि भावनाओं से ओतप्रोत दिखाई देती है। 'रामनरेश त्रिपाठी' जो इस युग के एक महान कवि हुए हैं उनकी मिलन कविता में नारी के प्रति सकारात्मक भाव अभिव्यक्त होते हैं

''अब कर्तव्य यही है
पूराकरूं वही उद्देश्य
जिसकी पूर्ति हेतु उद्यत थे
मेरे प्रिय प्राणेश।'' [2]

अतंतः इस युग के लेखकों ने राष्ट्रीय चेतना की ज्योत जलाई। इन्होंने नारी को पुरुष के समान बतलाकर उसे घर की चारदीवारी से बाहर निकलने की प्रेरणा दी है, ताकि नारी अपनेसुप्त स्वाभिमान को जगा सके।

तत्पश्चात् छायावाद युग नारी के लिए सपनों की सौगात लेकर आया। इस युग में नारी संबंधी चेतना का पूर्णतः विकास हुआ। द्विवेदी युग में जगी नारी क्रांति की अलख, इस युग में पूर्णतः साकार हो गई। छायावाद के प्रमुख चार स्तंभों में से एक स्तंभ स्वयं महादेवी वर्मा थी। इस काल में शिक्षा के विकास के परिणाम स्वरुप समाज में नारी संबंधी संकीर्ण दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। नारी के मन में नए विचारप्रस्फुटित होने लगे। अब वह अपने अधिकारों के प्रति जागृत होने लगी। यह सब छायावाद कवियों के नारी संबंधी क्रांतिकारी विचारों की उपज है। नारियाँ अपने कर्तव्यों के साथ–साथ अधिकारों को भी समझने लगी।

प्राचीन समय से ही भारतीय धर्मग्रथों में भारतीय संस्कारों में नारी को यही शिक्षा दी जाती थी की उसकी दुनिया सिर्फ उसका परिवार पति तथा बच्चों के ही इर्द–गिर्द घूमती रहनी चाहिए। यही उसके सु:खी जीवन का मूल मंत्र है। नारी के बारे में यह धारणा बनी हुई थी की जब उसका जन्म हो तब से लेकर शादी तक अपने पिता के संरक्षण में तथा शादी के बाद अपने पति के संरक्षण में और बुढ़ापे के समय अपने बच्चों के संरक्षण में रहे।

2 देवेश ठाकुर – प्रसाद के नारी चरित्र – पृष्ठ 179

इस पूरी जीवन प्रक्रिया में उसके जीवन पर उसका अपना कोई अधिकार नहीं था, वह पूरी तरह शोषित जीवन जीती थी। इस तरह उसका जीवन बड़ा कष्टमय था।

वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में नारी की इस दयनीय स्थिति में सुधार हुआ और उसके साथ मूल्यो तथा प्रवृतियों में काफी बदलाव देखने को मिला। आधुनिक नारी भी अपनी अलग पहचान बनाने को लालायित हुई। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नारी ने अपनी कामयाबी के झंडे फहराए। समाज का कोई भी क्षेत्र आज ऐसा नहीं है, जिसमें नारी ने अपना योगदान न दिया हो। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में आज नारी ने पुरुष के जैसी प्रतिष्ठा ही प्राप्त नहीं की अपितु विज्ञान, प्रशासनिक सेवा, अंतरिक्ष यात्रा, पर्वतारोहण, खेल जगत इत्यादि क्षेत्रों में पुरुषों के एकाधिकार को भी चुनौती दे डाली है। नारी इतने कम समय में भी विकसित होकर पुरुषों से आगे निकल चुकी है। यह बड़े गौरव की बात है कि भारतीय नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के लिए प्रेरणा बन कर उभरी है। वर्ष 2016 में ओलंपिक खेलो में हमारे देश की नारी शक्ति ने ही देश की लाज रखी। अतः नारी का यह मुकाम एक दिन की मेहनत से प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि इसके पीछे उसके स्वयं की इच्छा शक्ति, उसके संघर्ष करने की योग्यता, पाश्चत्य शिक्षा और समाज सुधार आंदोलनों का भी अति महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आज की आधुनिक नारी ने परंपरावादी जंजीरों को तोड़ दिया है। जिसके अंदर उसे सिर्फ एक वस्तु समझा जाता था। आज समाज में यह क्रांतिकारी बदलाव नारी चेतना का एक सराहनीय परिणाम है। जब तक समाज में कोई बदलाव नहीं होगा। जब तक विचारों में कोई वैचारिक परिवर्तन न हो। आधुनिक नारी जो प्राचीन काल में अपने जीवन संबंधी निर्णय के लिए पुरुषों पर निर्भर थी। आज वह अपनेजीवन के सभी फैसले स्वयं ले रही है। आज नारी परंपरागत संस्कारों और रूढ़ी मान्यताओं से एक हद तक मुक्त होकर, अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है। आज नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से आगे निकल चुकी है। पहले जहाँ उसे पर्दे में रखा जाता था, वही आज वह अपने आत्मिक बल के कारण न केवल परदे से बाहर निकलने में सक्षम हुई है, बल्कि उसने हर क्षेत्र में अपनी सफलता का परिचय दिया है।

ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 10
October 2018

समाज के जीवन के किसी भी पहलू से आज की नारी अछूती नहीं है। अतः आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जो नारी की पहुंच से परे हो, चाहे वह खेलों का क्षेत्र हो या शिक्षा का। हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपना परचम लहराया है। समाज की रूढ़िवादी सोच के बीच संघर्ष करते हुए महिला ने न केवल अपने आपको समाज के बीच उभारा है, बल्कि समाज के लिए आदर्श, प्रेरणा शक्ति, मार्गदर्शक और महान व्यक्तित्व के रूप में उभरकर सामने आई है। गांव से निकलकर बेटियाँ न सिर्फ अपने जीवन को सुःखमय बना रही है, अपितु अपने माता–पिता गांव व देश का नाम भी रोशन कर रही है। आज समाज में नारी की छवि पूर्णतया बदल गई है। गांधी जी का विश्वास था कि भले ही पुरुष पाशविक बल में नारी से अधिक बलवान हो, लेकिन आत्मिक बल में तो नारी ही पुरुष से ज्यादा शक्तिशाली है। लेकिन इसके लिए शर्त यह है कि उसे अपने शारीरिक सौंदर्य की बजाय, अपने आत्मिक सौंदर्य को निखारना होगा। तभी वह अपने बदले हुए रूप को बरकरार रख पाएगी, अन्यथा मूल्यों का पतन हो जाएगा। पिता, पुत्र, भाई व पति के संरक्षण में रहने वाली नारी, अब अपने आपको अबला न समझकर स्वयं को उनकी सहयोगिनी के रूप में देखें। तभी नारी विकासशील रह सकती है। अब जरूरत है, नारी को अपने आत्मिक गुणों को संजोकर रखने की, ताकि वह समाज में अस्तित्व बनाए रखें और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती रहे। आज नारी सद्गुणों रूपी सौंदर्य और सच्ची मेहनत का प्रतीक है।

चूंकि नारी को मुस्लिम शासकों ने राज–काज तथा शैक्षिक जीवन से दूर रखा तथा इस काल में नारी को को शिक्षा देना जरूरी नहीं समझा जाता था। भारतीय समाज नारी को अपनी सेविका समझता था। वहउनके अत्याचार सहती रही, संरक्षक समझे जाने वाले पिता, पुत्र, व भाई भी उसको अबला समझकर उसकी लाचारी का फायदा उठाते थे। नारी से धार्मिक कट्टरता एवं नैतिकता का कठोरता से पालन करवाया जाता था। नारी की स्थिति देखकर यह कहना अनुचित न होगा की वह तो इस पृथ्वी पर सिर्फ देह रूप में विद्यमान थी। उसका मन चेतना व आत्मा मर चुके थे। ''आर्थिक गुलामी की जंजीर उसके

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 10
October 2018

पैरों में डाल दी गई। संरक्षक के रूप में पिता, भाई, पति व पुत्र जैसे विविध चेहरों वाले पुरुष नारी का मनमाना शोषण करने को स्वतंत्र थे।''[3]

हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि नारी की स्थिति में सुधार होना तब शुरू हुआ, जब वह शिक्षित हुई। यह उसकी हालत में सुधार की तरफ पहला और एक अत्यंत मजबूत कदम था। जो उसे उन्नति की ओर ले गया। यह सुधार अचानक पैदा हुआ। कोई चमत्कार नहीं था। बल्कि कई वर्षों तक लगातार महिलाओं के द्वारा किए गए प्रयासों का एक सराहनीय परिणाम था। प्रारंभ में उसे समाज के ताने सुनने को मिले और सहयोग भी नसीब न हुआ। परंतु धीरे–धीरे उसकी सच्ची मेहनत विश्वास और प्रयासों को देखकर समाज का रवैया बदला, महिलाओं के प्रति उनकी सोच में परिवर्तन आना शुरू हुआ। यह सब नारी चेतना का परिणाम था। उसे अपने अस्तित्व का एहसास हुआ और चेतना का भाव उसके अंतर्मन में हिलोरे मारने लगा। यह सब उस चेतन शक्ति के कारण हुआ की नारी भी स्वतंत्र व्यक्तित्व की हकदार है और उसकी भी एक स्वतंत्र सत्ता है। नारी अब केवल ईश्वर की प्रार्थना में ही विश्वास रखने वाली, अबला नहीं, बल्कि समय की आवश्यकता अनुसार सर्प की फुकार मारने वाली शक्ति में विश्वास रखती है। अब पुरुष प्रधान समाज में नारी अपने अधिकारों की मांग करने लगी। वह भी पुरुषों के समान अपने अधिकारों, सुरक्षा, सम्मान की मांग करने लगी। इस काल में नारी सक्रिय हुई और अपनी स्वतंत्रता के महत्व को जानने लगी। अब नारी घर की चारदीवारी तक संतुष्ट नहीं रही। वह स्वयं को घर से बाहर पुरुष प्रधान समाज में लाकर अपनी पहचान बनाना चाहती थी।

नारी के महत्व को समझते हुए हम आज इस बात पर एकमत है कि आधुनिक काल में नारी के विमर्श पर अनेकों संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। आज कृष्णा, सोबती, चित्रा, मुद्गल, रोहिणी अग्रवाल, मेस्यी, पुष्पा, अनामिका, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, मन्नू भंडारी, ममता कालिया जैसी सुप्रसिद्ध लेखिकाओं की अंतहीन लंबी फेहरिस्त हमारे सामने है, जो नारियों को आज के संदर्भ में अपनी रचनाओं में गढ़ रही है।वह उनके जीवन में आनेवाले,कहे व अनकहे सभी पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाती है। साहित्य में

3 डॉ० खापुरी – प्रेमचंद साहित्य में व्यक्ति और समाज – पृष्ठ 116

ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 10
October 2018

नारी की गरिमा बढ़ी और वह विविध रूपों में वर्णित की जा रही है। इस युग की नारी ने अपने विचारों में क्रांति, युवा जोश तथा शरीर में नई शक्ति का संचार किया। यह रास्ता उसे विकास की ओर ले गया।

निष्कर्ष: इस प्रकार सार रूप में कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता से पहले वैदिक युग को छोड़कर भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष के लिए दोहरा मापदंड था। एक तरह जहाँ जिस काम के लिए पुरुष की आलोचना नहीं होती थी, वहीं दूसरी और उन्हीं कामों के कारण पत्नी कोकुल्टा कहा जाता था।भारतीय समाज में नारी के लिए धर्म, आचार, व्यवहार, कार्य और अधिकारों की परिभाषा पुरुषों से एकदम अलग तैयार करके रखी गई थी। पहले नारी को हीन दृष्टि से देखा जाता था और उसे अपना जीवन स्वेच्छा से जीने का कोई अधिकार नहीं था। उस समय के समाज के सभी नियम अकेली स्त्री पर ही लागू होते थे। अतः पितृसतात्मकता एवं पुरूष प्रधान सामाजिक ताने बाने में नारी की स्थिति दोयम दर्जे की थीं। लेकिन आधुनिक युग में नारी जीवन के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकी है और वह समाज में समान की सूचक मानी जाती है परन्तु भारतीय समाज जिस संक्रमण काल से गुजर रहा है, उसके अंतर्गत नारी अपराधों में काफी वृद्वि हुई है और अब अबोध बालिकाओं तक को शारीरिक, मानसिक व लैंगिक उत्पीडन का शिकार होना पड़ रहा है जो नारी समान की दृष्टि से सभ्य भारतीय समाज के लोगों के लिए एक चिंता का विषय है जिस पर समाज के बुद्विजीवी वर्ग को अपनी भूमिका का सही निर्वहन करना चाहिए ताकि भारतीय समाज में नारी की स्थिति सुधर सके।

संदर्भ सूची:

- गजानंद शर्मा, **प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी**, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1971।
- आशा रानी व्होरा, **नारी विद्रोह के भारतीय मंच**, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000।
- गोपाल राय, **हिंदी उपन्यास का इतिहास**, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , 2002।
- कुसुम त्रिपाठी, **जब स्त्रियों ने इतिहास रचा**, नवजागरण प्रकाशन द्वारा सुधीर ढवले मिसाल, ले–आऊट जरिपटका, नागपुर, 2004।

ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 10
October 2018

- अरविंद जैन, **स्त्री : मुक्ति का सपना**, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली , 2006।
- अलका प्रकाश, **नारी चेतना के आयाम,** लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007।
- कुमुद वर्मा, **आधी दुनिया का सच,** सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011।
- कृष्णकांत सुमन, **21वीं सदी में स्त्रियों के समक्ष चुनौतियां,** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012।